साप्ताहिक
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

दि कार्मिक पोस्ट

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 9, अंक : 23 (प्रति बुधवार),इन्दौर, 24 जनवरी 2024 से 30 जनवरी 2024 पेज :4 कीमत : 3 रुपये

इस गणतंत्र अपने संवैधानिक अधिकारों के जरिये पर्यावरण रक्षा की शपथ लें

भारत, हिंदुस्तान या फिर इंडिया, चाहे कितने ही नामों से आप अपने देश को बुला लीजिए, है तो यह अनमोल ही। राम, गौतम बुद्ध और बाबासाहेब से लेकर चंद्रशेखर आज़ाद के इस देश में अब तक बहुत कुछ बदला है। यहां की आबोहवा बिल्कुल बदल चुकी है। गणतंत्र दिवस' कैसा हो? देश की ज़रूरतें क्या हैं,` सपनों का भारत कैसा हो?

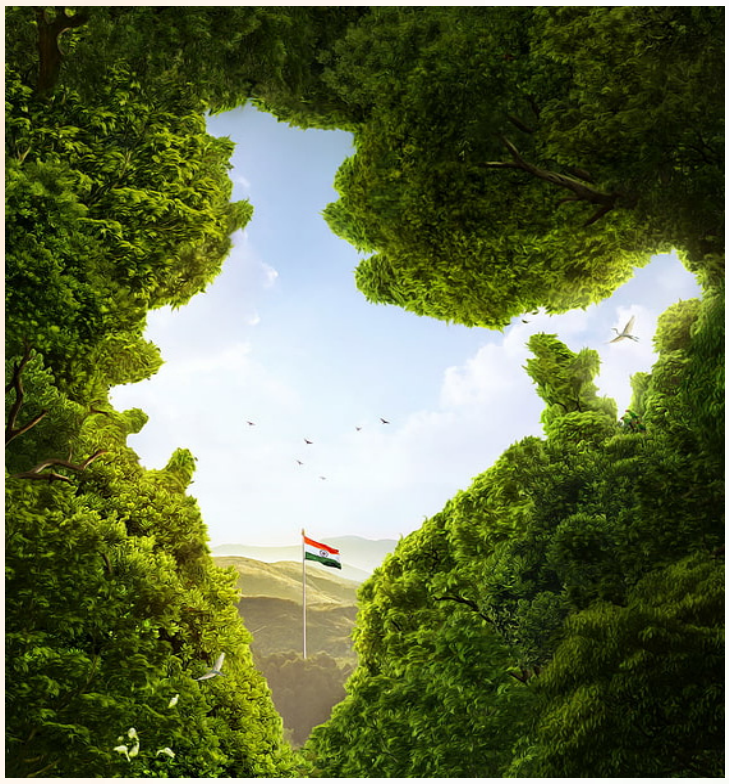

पौराणिक काल से सीखने की क्यों है ज़रूरत

रामायण में भगवान राम ने समुद्र पर सेतु बनाने से पहले समुद्र देव की 7 दिन तक पूजा की थी। कभी सोचा है क्यों भगवान ने पूजा की? वह तो साक्षात श्री हरि थे, उन्हें ऐसी क्या ज़रूरत पड़ी कि उन्हें पूजा करनी पड़ी समुंद्र की? वो चाहते तो एक तीर से पूरे सागर को सुखाकर यूं ही लंका की ओर कूच कर देते लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने समुद्र देव से प्रार्थना की कि आप हमें सेतु बनाने के लिए जगह दें, जिससे जलीय जीवन प्रभावित ना हों। उन्होंने समुद्र के नीचे बसे जलीय संसार की सोची। इसी प्रकार से महाभारत में यक्ष ने युधिष्ठिर से जो पहला प्रश्न किया, वो यह था कि बताओ धरती से भारी क्या है? और

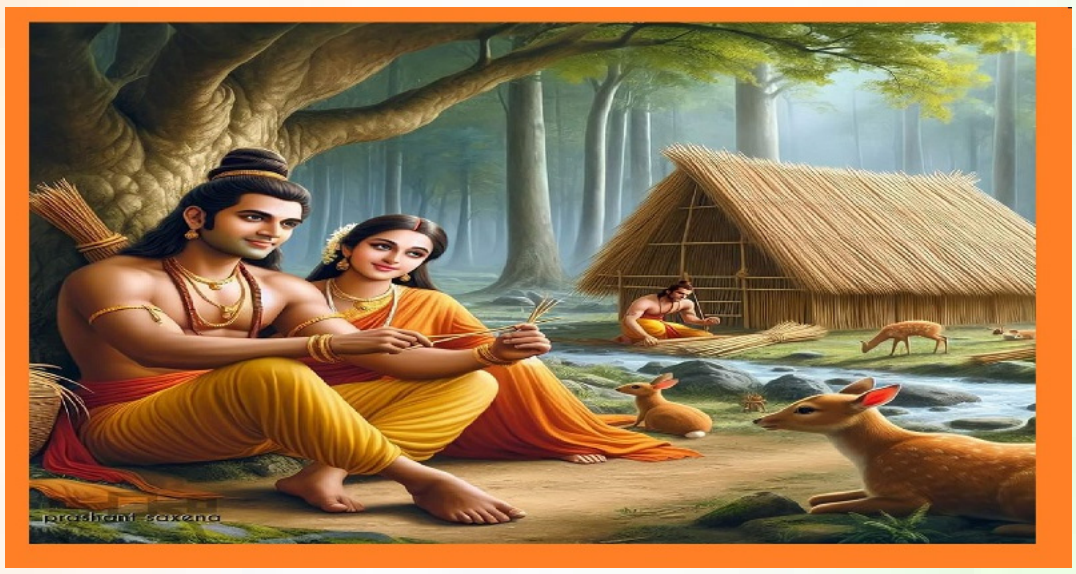

आज हमें भगवान राम की तरह पर्यावरण की सुरक्षा के लिए संकल्पवान होने की जरुरत है और पर्यावरण को सहेजने की जरुरत है।

आकाश से ऊंचा कौन है? इस पर उत्तर देते हुए युधिष्ठिर बोले, धरती से भारी माँ है और आकाश से ऊंचा पिता हैं। इससे यह पता चलता है कि पौराणिक काल से ही धरती को माँ का दर्ज़ा दिया गया है। देव कथाओं में भी पृथ्वी के संरक्षण की बातें की गई हैं।

औद्योगिकरण के नाम पर पर्यावरण दोहन

तो क्या आज हम अपने ही आराध्यों की बात पर चल रहे हैं? नहीं, आज हम हर जगह गंदगी देखते हैं, विकास व औद्योगिकरण के नाम पर पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, पानी का स्तर शून्य तक पहुंचना, प्लास्टिक का धरती को जकड़ना, जनसंख्या विस्फोट, आदि। चलिए इस 71वें गणतंत्र दिवस हम अपने मूलभूत अधिकारों को सही से प्रयोग करने की शपथ लें, संकल्प करें। आइए इसी संदर्भ में हम अपने कुछ अधिकारों की बात कर लेते हैं।

इन अधिकारों को नए तरीके से अपनाना होगा

पर्यावरण संरक्षण के तहत अपने कैंपेन को संचालित करते सावन। फोटो साभार-सावन कनौजिया

राइट टू एजुकेशन- एजुकेशन अर्थात शिक्षा। शिक्षा ऐसी कि यदि कहीं हम घूमने जा रहे हैं, तो वहां की स्वच्छता बनाए रखें। शिक्षा ऐसी कि हर कार्य को अपना समझकर करें।

राइट टू इक्वलिटी- इक्वलिटी यानी समानता। समानता ऐसी कि यदि रास्ते में कहीं कुछ पड़ा है, तो हम उसे उठाकर कूड़ेदान में डालें। हम यह ना सोचें कि स्वच्छता केवल सफाईकर्मियों का कार्य है, बल्कि स्वच्छता हम सभी का संकल्प होना चाहिए।

राइट टू फ्रीडम ऑफ रिलिजियन- धर्म के प्रति आज़ादी यानी हम ऐसे कार्य करें, जिससे हमारी धार्मिक मान्यताएं खंडित ना हों और हमारी प्रकृति भी बनी रहे। इस 71वें गणतंत्र दिवस हम यह शपथ लें कि जिस तरह मंदिर देखते ही घंटा देखते ही हमारे हाथ उठ जाते हैं, इसी प्रकार यदि कहीं पानी बह रहा हो, तो हमारे हाथ उस पानी को बचाने हेतु भी उठें।

राइट टू फ्रीडम- फ्रीडम यानी आज़ादी ऐसी कि हम खुलकर बिना डरे जलवायु परिवर्तन जैसे गंभीर मुद्दों पर अपनी आवाज़ बुलंद कर सकें।

इस बार इन संकल्पों को यदि हमने ले लिया, तो पर्यावरण संरक्षण की बात डंटे की चोट पर पूरे विश्व में की जा सकती है। नागरिकों को छोड़ सरकार भी इस 71वें राष्ट्रीय पर्व पर यह निश्चित करे कि अब फाइलों में नहीं, ज़मीन पर काम हो। अर्थात कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए शीघ्र ही सकारात्मक कदम बढ़ाए। पवन ऊर्जा को बढ़ावा दें। मेरा ऐसा मानना है कि यदि इन बातों पर हमने गौर किया, तो हमारी संविधान की शपथ पूरी हो जाएगी।

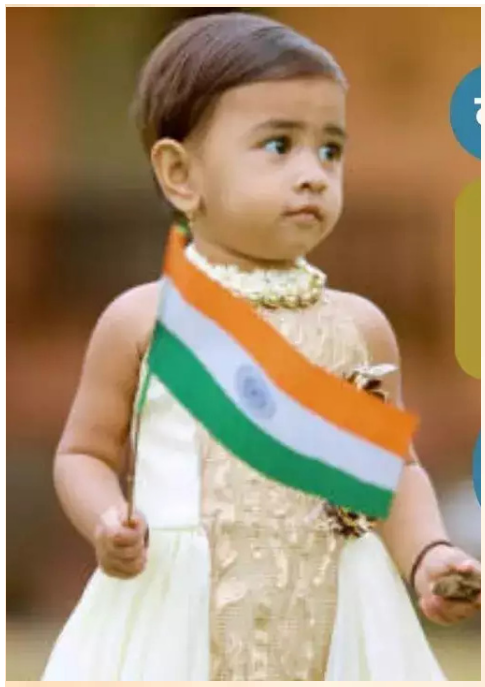

बेटियां मान हैं, देश की शान हैं....

राष्ट्रीय बालिका दिवस- इस तरह से बढ़ाएं अपनी बेटी का आत्मविश्वास, तभी मिलेगी उसके हौसलों को उड़ान

नई दिल्ली जिस तरह से हर घर के लिए बेटा जरूरी माना जाता है, ठीक उसी तरह से समाज के और राष्ट्र के उत्थान के लिए हर घर में बेटी का होना बेहद महत्वपूर्ण है। जब एक लड़की जन्म लेती है तो वो अपने घर के साथ-साथ अपने ससुराल की भी जिम्मेदारी बखूबी निभाती है। ऐसे में परिवार को संभालने से लेकर परिवार की पीढ़ी को आगे बढ़ाने तक की जिम्मेदारी एक लड़की की ही होती है।

एक समय था, जब बेटियों को लोग बोझ मानते थे, पैदा होते ही लड़की को मार दिया जाता था, पर आज का वक्त बदल चुका है। अब लोग अपने घर की लड़की को ना सिर्फ शिक्षित बनाते हैं, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का भी पूरा प्रयास करते हैं। आज के वक्त में लड़कियां ऊंचाईयों की राह पर चलकर अपना और अपने परिवार का नाम रोशन कर रही हैं। लड़कियों की स्थिति को और ज्यादा सुधारने के लिए वर्तमान में कई संगठन काफी काम कर रहे हैं। बेटियों के खिलाफ होने वाले अपराधों से उन्हें बचाने और उनके सामने आने वाली चुनौतियों व अधिकारों के संरक्षण के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। हर साल ये दिन 24 जनवरी को मनाया जाता है। अगर आपके घर में भी बेटी है तो उसे आत्मनिर्भर बनाने के लिए आप कुछ पहल जरूर करें।

सिखाएं आत्मरक्षा के गुण- आज के समय में जब लड़कियां अकेले स्कूल, कॉलेज और दफ्तर जा रही हैं, तो उन्हें आत्मरक्षा का ज्ञान जरूर होना चाहिए क्योंकि ऐसा जरूरी नहीं है कि उनके साथ हर वक्त कोई ना कोई मौजूद रहे। ऐसे में अपने घर की लड़की को बचपन से ही आत्मरक्षा के गुण सिखाएं, ताकि वो खतरे के वक्त खुद का बचाव कर सके।

बढ़ाएं उनका आत्मविश्वास- आपने अक्सर देखा होगा, कि बहुत सी लड़कियां शिक्षित होने के बावजूद अपने विचार लोगों के सामने रखने के डरती हैं। उन्हें लगता है कि लोग उनका मजाक उड़ाएंगे। ऐसा तब होता है, जब किसी में आत्मविश्वास की कमी हो। अगर आपके घर की बेटी भी कुछ कहने या करने से डरती है तो उसका आत्मविश्वास जरूर बढ़ाएं। उन्हें अपना काम खुद से करने की सलाह दें।

करने दें फैसला- ज्यादातर लड़कियों की पढ़ाई से लेकर हर छोटा-बढ़ा फैसला, उनके घर के बड़े या पुरुष ही करते हैं, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। हर किसी को ये हक होता है, कि वो अपने से जुड़े फैसले खुद से लें। अपने घर की बेटी को फैसला लेने के लिए प्रेरित करें। फैसला लेते वक्त उनका साथ दें। अगर उन्हें कहीं संशा हो तो उन्हें आराम से बैठा कर समझाएं।

ना करें ज्यादा रोक-टोक- ज्यादा रोक-टोक करने से आपके घर की बेटी का आत्मविश्वास खत्म हो सकता है। ऐसे में उन्हें अच्छा और गलत समझाएं, लेकिन ज्यादा रोक-टोक ना करें। किसी भी लड़की पर प्रतिबंध लगाना किसी भी हद तक सही नहीं है। इससे वो कैद हो जाती हैं।

बनाएं आत्मनिर्भर - आज के समय में जिस तरह से लड़कों का नौकरी करना जरूरी है, ठीक उसी तरह से लड़कियों को भी आत्मनिर्भर बनाना चाहिए। यहां बात सिर्फ आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने की नहीं है, आप उन्हें ड्राइव करना सिखा सकते हैं, ताकि वो घर के काम के साथ-साथ बाहर की जिम्मेदारी भी बिना डरे उठा सकें। इसके साथ ही उन्हें नौकरी के लिए भी प्रोत्साहित करें।

रामलला की दिवानगी -पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ अयोध्या धाम के लिए साइकिल पर निकला युवक

पीलीभीत- उत्तराखंड के थल कस्बे का एक युवक पर्यावरण संरक्षण का संदेश लेकर अयोध्या धाम की यात्रा पर निकला है. यह युवक तकरीबन 650 किलोमीटर साइकिल चला कर अयोध्या पहुंचेगा. युवक का कहना है कि यात्रा के जरिए वह अपनी राम भक्ति तो जाहिर कर ही रहा है. इसके साथ ही वह रास्ते में मिलने वाले लोगों को पर्यावरण के लिए जागरूक भी करेगा. हाल ही में युवक पीलीभीत पहुंचा है जिसका रामभक्तों ने गर्मजोशी से स्वागत किया.

दरअसल, मूल रूप से उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के थल कस्बे के रहने वाले धीरज जोशी एक साइकिलिस्ट है. इससे पहले भी वे उत्तराखंड के चार धाम, कश्मीर से कन्याकुमारी तक साइकिल यात्रा कर चुके है. धीरज के मन में प्रभु श्रीराम के लिए काफी अधिक आस्था है. ऐसे में उन्होंने जनकपुरी जाकर यह संकल्प लिया कि वे अयोध्या में होने जा रहे ऐतिहासिक प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का साक्षी बनेंगे. क्योंकि वह एक पेशेवर साइकिलिस्ट है तो वह अपनी साइकिल के जरिए ही तकरीबन 650 किलोमीटर का सफर तय कर अयोध्या पहुंचेंगे.

सनातन संस्कृति में पर्यावरण का महत्व साइकिल यात्रा पर निकले धीरज ने बताया कि सनातनी संस्कारों के तहत हमारे पुरखे भगवान के जितना ही प्रकृति को भी पूजते है. बीते कुछ दशकों में पर्यावरण पर लगातार प्रतिकूल प्रभाव पड़ता जा रहा है. ऐसे में हमारे ग्लेशियर पिघल रहे है. ऐसे में आपदाओं का खतरा तो मंडरा ही रहा है साथ ही साथ आने वाले समय में दुनिया भर में पेयजल का भी संकट गहरा जाएगा. यात्रा के दौरान राम भक्ति के साथ ही साथ वे पर्यावरण के प्रति जागरूकता अभियान भी चलाएंगे.

देश के लिए प्राण देने वाले अमर सपूतों को श्रद्धांजलि

भारतीय गणतंत्र का सार

इस दिन हर भारतीय अपने देश के लिए प्राण देने वाले अमर सपूतों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति राष्ट्र के नाम संदेश देते हैं। स्कूलों, कॉलेजों आदि मे कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। भारत के राष्ट्रपति दिल्ली के राजपथ पर भारतीय ध्वज फहराते हैं। राजधानी दिल्ली में बहुत सारे आकर्षक और मनमोहक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। दिल्ली को अच्छी तरह सजाया जाता है कर्त्तव्यपथ पर बड़ी धूम-धाम से परेड निकलती है जिसमें विभिन्न प्रदेशों और सरकारी विभागों की झांकियाँ होतीं हैं। देश के कोने कोने से लोग दिल्ली मे 26 जनवरी की परेड देखने आते हैं। भारतीय सेना अस्त्र-शस्त्रों का प्रदर्शन होता है। 26 जनवरी के दिन धूम-धाम से राष्ट्रपति की सवारी निकाली जाती है तथा बहुत से मनमोहक कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

देश के हर कोने मे जगह जगह ध्वजवन्दन होता है और कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। विश्व भर में फैले हुए भारतीय मूल के लोग तथा भारत के दूतावास भी गणतंत्र दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनातें हैं। भारत के हर कोने कोने में मनाया जाता है , और देश के प्रति एक नई उमंग देखने को मिलती है ।

गणतंत्र दिवस मनाने का उद्देश्य गणतंत्र दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि 26 जनवरी 1950 को पूरे 2 साल 11 महीने और 18 दिन लगा कर बनाया गया संविधान लागू किया गया था और हमारे देश भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया गया।

इतिहास सन् 1929 के दिसंबर में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर इस बात की घोषणा की गई कि यदि अंग्रेज सरकार 26 जनवरी 1930 तक भारत को स्वायत्तयोपनिवेश (डोमीनियन) का पद प्रदान नहीं करेगी, जिसके तहत भारत ब्रिटिश साम्राज्य में ही स्वशासित एकाई बन जाने उस दिन भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की और अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया। उस दिन से 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त होने तक 26 जनवरी स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। इसके पश्चात स्वतंत्रता प्राप्ति के वास्तविक दिन 15 अगस्त को भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद संविधान सभा की घोषणा हुई और इसने अपना कार्य 9 दिसम्बर 1946 से आरंभ कर दिया। संविधान सभा के सदस्य भारत के राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के द्वारा चुने गए थे। डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, जवाहरलाल नेहरू, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि इस सभा के प्रमुख सदस्य थे। संविधान निर्माण में कुल 22 समितीयाँ थी जिसमें प्रारूप समिति (ड्राफ्टींग कमेटी) सबसे प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण समिति थी और इस समिति का कार्य संपूर्ण 'संविधान लिखना' या 'निर्माण करना' था। प्रारूप समिति के अध्यक्ष विधिवेत्ता डॉ0 भीमराव आंबेडकर थे। प्रारूप समिति ने और उसमें विशेष रूप से डॉ. आंबेडकर जी ने 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन में भारतीय संविधान का निर्माण किया और संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 26 नवम्बर 1949 को भारत का संविधान सुपूर्द किया, इसलिए 26 नवंबर दिवस को भारत में संविधान दिवस के रूप में प्रति वर्ष मनाया जाता है। संविधान सभा ने संविधान निर्माण के समय कुल 114 दिन बैठक की। इसकी बैठकों में प्रेस और जनता को भाग लेने की स्वतन्त्रता थी। अनेक सुधारों और बदलावों के बाद सभा के 284 सदस्यों ने 24 जनवरी 1950 को संविधान की दो हस्तलिखित कॉपियों पर हस्ताक्षर किये। इसके दो दिन बाद संविधान 26 जनवरी को यह देश भर में लागू हो गया। 26 जनवरी का महत्व बनाए रखने के लिए इसी दिन संविधान निर्मात्री सभा (कांस्टीट्यूएंट असेंबली) द्वारा स्वीकृत संविधान में भारत के गणतंत्र स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई। जैसा कि आप सभी जानते है कि 15 अगस्त 1947 को अपना देश हजारों देशभक्तों के बलिदान के बाद अंग्रेजों की दासता (अंग्रेजों के शासन) से मुक्त हुआ था। इसके बाद 26 जनवरी 1950 को अपने देश में भारतीय साशन और कानून व्यवस्था लागू हुई।

गणतंत्र दिवस समारोह राजपथ पर प्रथम गणतंत्र समारोह में सम्मलित होने (घोड़े की बग्घी में) जाते देश प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्र ध्वज को फहराया जाता हैं और इसके बाद सामूहिक रूप में खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। फिर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा को सलामी दी जाती है। गणतंत्र दिवस को पूरे देश में विशेष रूप से भारत की राजधानी दिल्ली में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस अवसर के महत्व को चिह्नित करने के लिए हर साल राजपथ पर एक भव्य परेड इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन (राष्ट्रपति के निवास) तक राजधानी नई दिल्ली में आयोजित की जाती है। इस भव्य परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंट, वायुसेना, नौसेना आदि सभी भाग लेते हैं। इस समारोह में भाग लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से राष्ट्रीय कडेट कोर व विभिन्न विद्यालयों से बच्चे आते हैं, समारोह में भाग लेना एक सम्मान की बात होती है। परेड प्रारंभ करते हुए प्रधानमंत्री राजपथ के एक छोर पर इंडिया गेट पर स्थित अमर जवान ज्योति (सैनिकों के लिए एक स्मारक) पर पुष्प माला अर्पित करते हैं। इसके बाद शहीद सैनिकों की स्मृति में दो मिनट मौन रखा जाता है। यह देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े युद्ध व स्वतंत्रता आंदोलन में देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों के बलिदान का एक स्मारक है। इसके बाद प्रधानमंत्री, अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं, राष्ट्रपति बाद में अवसर के मुख्य अतिथि के साथ आते हैं।

परेड में विभिन्न राज्यों की प्रदर्शनी भी होती हैं, प्रदर्शनी में हर राज्य के लोगों की विशेषता, उनके लोक गीत व कला का दृश्यचित्र प्रस्तुत किया जाता है। हर प्रदर्शिनी भारत की विविधता व सांस्कृतिक समृद्धि प्रदर्शित करती है। परेड और जुलूस राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित होता है और देश के हर कोने में करोड़ों दर्शकों के द्वारा देखा जाता है। 2014 में, भारत के 72वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, महाराष्ट्र सरकार के प्रोटोकॉल विभाग ने पहली बार मुंबई के मरीन ड्राईव पर परेड आयोजित की, जैसी हर वर्ष नई दिल्ली में राजपथ में होती है।

इंसान से उसके जीवन के औसतन छह महीने छीन सकता है जलवायु परिवर्तन, रिसर्च में हुआ खुलासा

नई दिल्ली। एक नए अध्ययन से पता चला है कि जलवायु में आता बदलाव हर व्यक्ति से उसके जीवन के औसतन छह महीने छीन सकता है। इस अध्ययन के मुताबिक यदि वार्षिक औसत तापमान में एक डिग्री सेल्सियस की वृद्धि होती है तो उससे लोगों की जीवन प्रत्याशा 0.44 वर्ष यानी करीब साढ़े पांच महीने तक कम हो जाएगी। इसके साथ ही शोध में यह भी कहा गया है कि जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है वो बारिश में आते बदलावों के साथ मिलकर जीवन प्रत्याशा को कहीं ज्यादा प्रभावित कर सकता है। इस अध्ययन के नतीजे जर्नल प्लोस क्लाइमेट में प्रकाशित हुए हैं। गौरतलब है कि वैश्विक स्तर पर बढ़ता तापमान पहले ही एक डिग्री सेल्सियस को पार कर गया है और इसको लेकर कयास लगाए जा रहे हैं कि यह बहुत जल्द डेढ़ डिग्री सेल्सियस की सीमा को पार कर सकता है।

नेशनल ओसेनिक एंड एटमोस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) के नेशनल सेंटर फॉर एनवायर्नमेंटल इंफॉर्मेशन (एनसीईआई) ने हाल ही में इस बात की पुष्टि की है कि 2023 पिछले 174 वर्षों के जलवायु रिकॉर्ड का अब तक का सबसे गर्म वर्ष था। जब वैश्विक तापमान में होती वृद्धि 20वीं सदी के औसत तापमान से 1.18 डिग्री सेल्सियस ज्यादा दर्ज की गई है। यह नया अध्ययन बांग्लादेश की शाहजलाल यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी और द न्यू स्कूल फॉर सोशल रिसर्च, न्यूयार्क से जुड़े शोधकर्ता अमित रॉय द्वारा किया गया है। अपने इस अध्ययन में उन्होंने 191 देशों में 1940 से 2020 के बीच तापमान, वर्षा और जीवन प्रत्याशा से जुड़े आंकड़ों का विश्लेषण किया है। जलवायु परिवर्तन लोगों के स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करेगा इसे समझने के लिए वैज्ञानिकों ने एक रूपरेखा तैयार की है, जिसमें इसके स्वास्थ्य पर पड़ते प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रभावों को शामिल किया गया है। इनमें प्रत्यक्ष रूप से पड़ने वाले प्रभावों में मौसम में आते बदलाव और चरम मौसमी घटनाएं जैसे लू, बाढ़, सूखा शामिल हैं, जबकि अप्रत्यक्ष रूप से जलवायु परिवर्तन के आर्थिक प्रणालियों और पारिस्थितिक तंत्रों पर पड़ते प्रभावों को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में तापमान और वर्षा के अलग-अलग प्रभावों का अध्ययन करने के अलावा, शोधकर्ता रॉय ने अपनी तरह का जलवायु परिवर्तन सूचकांक भी तैयार किया है, जो व्यापक रूप से जलवायु परिवर्तन की गंभीरता को मापने के लिए इन दोनों कारकों को जोड़कर देखता है। रिसर्च के नतीजे दर्शाते हैं कि यदि इस सूचकांक में दस अंकों का इजाफा होता है तो उससे जन्म के समय जीवन प्रत्याशा छह महीने घट जाएगी।

पुरुषों से ज्यादा महिलाओं पर मंडरा रहा खतरा- वैश्विक स्तर पर देखें तो बढ़ते तापमान और जलवायु परिवर्तन का असर अलग-अलग रूपों में सामने आने लगा है। आज यह प्रभाव बढ़ते तापमान, बारिश में आते बदलावों और चरम मौसमी घटनों में होती वृद्धि तक ही सीमित नहीं है। यह बदलाव हमारे भोजन, पानी, हवा और मौसम को भी प्रभावित कर रहा है जो हमारे स्वास्थ्य के लिए खतरा पैदा कर रहा है। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि 2030 से 2050 के बीच जलवायु परिवर्तन सालाना करीब ढाई लाख मौतों की वजह बन सकता है। साथ ही इसकी वजह से प्रति वर्ष वैश्विक आय में 400 करोड़ डॉलर से ज्यादा का नुकसान होगा। अध्ययन में वैश्विक तापमान के साथ-साथ बारिश में आते बदलावों से जुड़े खतरों पर भी प्रकाश डाला गया है। जहां भारी बारिश से बाढ़, बीमारियों और फसलों को होते के नुकसान के साथ मृदा अपरदन और कुपोषण का खतरा बढ़ जाएगा। वहीं बारिश में आती कमी से सूखा, सिंचाई और पीने के पानी की कमी के साथ कृषि पैदावार को असर पड़ेगा। नतीजन न केवल खाद्य कीमतों में इजाफा होगा साथ ही खाद्य असुरक्षा का खतरा बढ़ जाएगा। जो लोगों में पोषण और स्वास्थ्य पर असर डालेगा। अध्ययन के मुताबिक दुनिया के कई बेहद कमजोर देश, जो कृषि से जुड़े रोजगार पर बहुत ज्यादा निर्भर हैं। उन देशों में यह बदलाव रोजगार को नुकसान पहुंचाने के साथ किसानों की आय में कमी की वजह बन रहे हैं। इसके साथ ही यह उस क्षेत्र में स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर रहे हैं। शोध में यह भी सामने आया है कि जलवायु में आता यह बदलाव पुरुषों की तुलना में महिलाओं की जीवन प्रत्याशा को कहीं ज्यादा प्रभावित कर सकता है। अनुमान है कि यदि वार्षिक जलवायु परिवर्तन सूचकांक 10 अंक बढ़ता है, तो जहां पुरुषों की जीवन प्रत्याशा करीब पांच महीने घट जाएगी। वहीं इसकी वजह से महिलाओं की जीवन प्रत्याशा में 0.6 वर्ष या सात महीनों की कमी का अनुमान लगाया गया है। ऐसे में अध्ययन में इन बदलावों के स्वास्थ्य पर पड़ते प्रभावों को सम्बोधित करने के लिए ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ते उत्सर्जन को कम करने के साथ-साथ जलवायु में आ रहे बदलावों के प्रति अनुकूलन की सिफारिश की है। इसके साथ ही शोध के मुताबिक आपदाओं के लिए तैयारी, सावजनिक स्वास्थ्य से जुड़े उपायों को अपनाकर और हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्टर को मजबूत करके इसके प्रभावों को सीमित किया जा सकता है।

भाजपा सरकार वन्यजीव संरक्षण व पर्यावरण को लेकर बेहद गंभीर - रवि किशन

गोरखपुर। भाजपा की डबल इंजन सरकार इको टूरिज्म, पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण को लेकर बेहद गंभीर है। वेटलैंड एवं ग्रासलैंड संरक्षण के लिए शहर से लेकर गांव तक कदम उठाया जा रहा है। नदियों की स्वच्छता के साथ लोगों को जोड़ने के साथ डॉल्फिन संरक्षण भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की प्राथमिकता में है।

ये बातें सदर सांसद रवि किशन ने बृहस्पतिवार को योगीराज बाबा गंभीरनाथ प्रेक्षागृह में गोरखपुर महोत्सव के अंतर्गत फिल्म फॉर ह्यूमैनिटी श्रृंखला के तीन दिवसीय इको टूरिज्म, वाइल्ड लाइफ, इनवायरमेंट एंड क्लाइमेटचेंज कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में कही। शहरवासियों से ग्रीन ऑस्कर पुरस्कार से सम्मानित माइक हरिगोविंद पांडेय की फिल्मों का प्रदर्शन देखने के लिए अधिक से अधिक संख्या में आने का आह्वान किया। मुख्य वन संरक्षक डॉ. भीमसेन ने कहा कि वन विभाग निरंतर अपनी गतिविधियों से लोगों को वन एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक कर रहा है। डीएफओ विकास यादव ने कहा कि स्कूली बच्चों के बगैर यह आयोजन अधूरा था। हेरिटेज फाउंडेशन की संरक्षिका डॉ अनिता अग्रवाल ने हमारी सनातन संस्कृति में प्रकृति और संस्कृति के समन्वय बनाए रखने पर सर्वाधिक जोर है। इस दौरान मोनिका पांडेय, हरेंद्र सिंह, दिनेश कुमार चौरसिया, शिवेंद्र यादव, अनिल तिवारी आदि मौजूद रहे।

वाइल्ड लाइफ फिल्म निर्माता निर्देशक माइक हरिगोविंद पांडेय की निर्देशित लुकिंग फॉर सुलतान, द माइग्रेटरी रिवर गंगा, गंगा डॉल्फिन एवं डब्ल्यूआईआई-नमामि गंगे द्वारा गोरखपुर में कराए गए कार्यों पर फिल्में प्रदर्शित की गई। अश्वनी दूबे द्वारा संग्रहित वाइल्ड लाइफ आधारित डाक टिकट का संग्रह प्रदर्शित किया गया। उधर, चंपा देवी पार्क में भी वन विभाग, नमामि गंगे, हेरिटेज फाउंडेशन एवं बैंबू मिशन की ओर से तैयार बांस के उत्पाद प्रदर्शित किए गए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008